तृतीय - अध्याय

तृतीय अध्याय

भगवतीचरण वर्मा के प्रमुख सामाजिक उपन्यासों के स्त्री-पात्र

भगवतीचरण वर्माजी का उपन्यास साहित्य क्षेत्र विशाल है । उन्होंने हिन्दी साहित्य के लिए लगभग देढ़ दर्जन उपन्यास देकर उपकृत किया है । उनमें से कुछ आत्मकथात्मक हैं, कुछ विशुद्ध सामाजिक हैं । उनके व्दारा लिखे गए सामाजिक उपन्यासों की संख्या भी काफी हैं । हमारी दृष्टि से उनके व्दारा लिखे गए उपन्यासों में से 'आखिरी दाँव' (1949) 'भूले बिसरे चित्र' (1959), और 'सामर्थ्य और सीमा', (1962) आदि उनके प्रमुख विशुद्ध सामाजिक उपन्यास हैं ।

वस्तुतः भगवतीचरण वर्मा सामाजिक समस्याओं के साथ बहुत ही धुल-मिल चुके हुए दिखाई देते है । उन्होंने सामाजिक उपन्यासों के अंतर्गत समाज के सभी अंगों पर प्रकाश ड़ाला है। उनके उपन्यासों में स्त्री पात्रों को भी उन्होने बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान दिया है । अतः यहाँ हम भगवतीचरण वर्माजी का स्त्री के प्रति जो दृष्टिकोण था उसकी और संक्षेप में संकेत करेंगे तो कोई गलती न होगी ।

प्रेमचंद्र काल तक के साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों में स्त्री को ऊपर उठाने का प्रयास अपने उपन्यासों के माध्यमसे किया था किन्तु बाद में उसकी आवश्यकता कम होने लगी थी, जिसका कारण था भारतीय समाज ने स्त्री-शिक्षा, स्त्री-स्वातंत्र्य, विधवा विवाह तथा अछूतोध्दार आदि विचारधाराओं को स्वीकृत किया गया था । इसीकारणवश वे समस्या केवल शिथिल रूप में शेष रह गई थीं । फिर भी समय की विड़ंबना में पिसे हुए भगवती बाबूजीनें उनमें से ही कुछ सामाजिक रूढ़ियों के सूक्ष्म पहलुओं को अपने उपन्यासों में पकडने का प्रयास किया है ।

भगवतीचरण वर्माजी के काल में भारतीय समाज व्यवस्थामें परिवर्तन हो रहा था । इसी कालमें स्त्री को खुली हवामें सांस लेने के लिए समाज व्यवस्थाने मुक्त कर दिया था किन्तु उसके शरीर के साथ केवल नैतिकता का नाता जोड़ लिया था । यौन के प्रति भारतीय समाज में सामाजिक

प्राणी आज भी बहुत ही सजग है, किंतु इन सबन्धों से स्त्री को बहुत ही दुःख सहना पडता है । इसका कारण है कि पुरूष की आर्थिक स्थिति को देखकर जीवन की सुविधाओं के लिए स्त्री को विवाह किसीसे भी कर लेना बुरा नहीं माना जाता । जिससे बाद में स्त्री को कतिपय कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था । इसकी ओर भगवती बाबू ने सचेत रहकर संकेत किया है । दूसरी बात यह है कि इसी युग में बिना शारिरिक सबन्ध किए आत्मिक प्रेम को ही ऊँचा उठाने की प्रवृत्ति जन्म ले रही थी । वस्तुतः प्रेम के क्षेत्र में यह विचित्र विरोधाभास है जिसे हिन्दी उपन्यासों ने प्रायः बिना किसी संदेह करके अश्रय दिया है । शरीर को यद्यपि हमेश तुच्छ ही माना जाता है, लेकिन उससे अधिक हीला - हवाला और द्वंद्व शरीर संपर्क को लेकर ही उपस्थित करने की प्रवृत्ति दिखाई है । भगवतीचरण वर्माजी की कुशाग्र दृष्टिने अपने उपन्यासों के स्त्री पात्रों को इस प्रवृत्ति से बाहर निकालने का प्रयास करके स्त्री को उपकृत ही किया है । भगवतीचरण वर्माजी ने समाज में स्त्री किस ढंग से नैतिकता का अतिक्रमण करती है यह देख लिया था । अतः उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री की इस प्रवृत्ति को नहीं छोडा है । उनके उपन्यासों की स्त्री पात्राएँ पुरूष के साथ शारिरिक सबन्ध स्थापित करने के लिए तत्पर तैयार हो उठती हुई दिखाई देती है, तो कभी-कभी ये स्त्री पात्राएँ स्वयं ही पुरूष को जकड लेने का प्रयास करती हुई दिखाई देती है । 'आखिरी दाँव' की चमेली शिवकुमार के द्वारा किए गए पहले ही एहसान के बदले अपने आपको उसे सौंप देती है, तो 'वह फिर नही आई' की रानी शामला ज्ञानचंद्र को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए रात को ज्ञानचंद के कमरे में घूसकर खुद ही कमरा बंद कर लेती है । किंतु भगवतीचरण वर्माजीने इन स्त्री पात्रों को परंपरागत प्रेम के आत्मिक घेरे को तोडने भी नहीं दिया है । स्पष्ट है भगवतीचरण वर्मा ने स्त्री को समाज की परिधि में बाँधने का प्रयास किया है । यही कारण है उनके उपन्यासों के स्त्री पात्र खुद को दोषी न मानकर पुरूष को दोषी मानती है । 'भूले बिसरे चित्र' की संतो अपने पतन के लिए गंगाप्रसाद को ही दोषी मानती है । वह स्पष्ट कहती है "मेरे देवता, तुम्ही ने तो मुझे वह बनाया है, जो मैं हूँ ।"[1] स्पष्ट है भगवतीचरण वर्मा की स्त्री पात्राएँ जो भी कुछ करती है वह केवल अपनी भलाई के लिए ही । अतः भगवतीचरण वर्मा के स्त्री पात्रों की इस प्रवृत्ति को हम सामान्य प्रवृत्ति ही कह सकते है । स्वयं भगवती बाबू और उनके उपन्यासों के पुरूष पात्रों की भी स्त्री सबन्धी यह धारणा है कि स्त्री अबला है, विवश है, पराजित है ।

स्पष्ट है कि भगवतीचरण वर्माजी ने ऐसे स्त्री पात्रों को अपने उपन्यासों में चित्रित करके भविष्यत्काल की स्त्रियों के लिए सचेत रहने का सुयोग्य संकेत ही दिया है ।

भगवतीचरण वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में चित्रित गृहिणी स्त्री पात्रों को कर्तव्यशील, पतिपराण, वात्सलमयी एवं सहनशीलता के रूप में चित्रित करके समाज के लिए आदर्श नारी की आवश्यकता होती है इसकी ओर सुखद संकेत किया है । उनके उपन्यास की गृहिणी अपने पति के अन्य स्त्रियों से हुए सबन्ध को सहज और स्वाभाविक मानकर चलती है । स्त्रियों का विश्वास है कि वह उनकी विवाहित पत्नी होने से उनका ही पति पर अधिकार है । इसका चित्रण हमें 'भूले बिसरे चित्र' की यमुना से मिलता है । वह अपने पति ज्वालाप्रसाद को स्पष्ट शब्दों में उत्तर देती है।'नम्बरदारिन का मुँह कि वह तुम्हें मुझसे छीन सके । इस घर की मालकिन तो मैं हूँ । तुम नम्बरदारिन के साथ हंस-खेल भले ही लेकिन रहोगे मेरे, हमेशा के लिए ।"[2]

इससे स्पष्ट है कि भगवतीचरण वर्माजी ने स्त्री से आदर्श नारी की अपेक्षा की है और उन्होंने अपने उपन्यासों में उन्हें उपर उठाने का प्रयास किया है । उनके उपन्यासों में चित्रित स्त्री पात्र चाहे विधवा हो या वेश्या हो इन सभी को समाजवादी दृष्टिकोण अपनाने को मजबूर कर दिया है । यही भगवतीचरण वर्माजी का स्त्री के प्रति आदर्शवादी दृष्टिकोण है, जिसकी सहायता से उन्होंने समाज को विघातक कृत्यों से बचाने का प्रयास किया है ।

हमारी दृष्टि से भगवतीचरण वर्माजी के जो प्रमुख सामाजिक उपन्यास है, उनके प्रकाशन क्रमानुसार उनमें चित्रित जो स्त्री पात्र हैं, उनको हमने अ - प्रमुख स्त्री पात्र, ब - गौण स्त्री पात्र इन दो वर्गो मे रखने का प्रयास किया है -

आखिरी दाँव (1949)

अ	ब
प्रमुख स्त्री पात्र	गौण स्त्री पात्र
चमेली	राधा
	चमेली की सास
	रानी तमोलिन

भूले बिसरे चित्र (1959)

अ	ब
प्रमुख स्त्री पात्र	गौण स्त्री पात्र
छिनकी	यमुना
जैदेई	रूक्मिनी
विद्या	उषा
	राधा
	राधेलाल की पत्नी
	शामलाल की पत्नी
	मलका उर्फ माया शर्मा
	संतो
	कैलासो
	रानी हेमवती देवी
	लावण्यप्रभा
	रानी साहिबा विजयपुर
	सलीमा
	रूक्मा
	रानी देवकुँवर
	महाराजीन
	महारानी
	रिपुदमनसिंह की पत्नी
	जोनाथन डेविड की पत्नी
	कामतानाथ की पत्नी
	चारुबाला चक्रवर्ती
	रानी
	गंगादेवी

भुले बिसरे चित्र (1959)

अ	ब
प्रमुख स्त्री पात्र	गौण स्त्री पात्र
	करीमन वेश्या
	भरोसी
	मैकी
	सुधा

सामर्थ्य और सीमा (1962)

अ	ब
प्रमुख स्त्री पात्र	गौण स्त्री पात्र
रानी मानकुमारी	वालिया
	सीमा सन्याल
	रोज ब्रैडी
	कालसी
	चंपा
	काशीबाई
	शिवानंद शर्मा की पत्नी
	रतनचंद मकोला की पत्नी
	नाहरसिंह की पत्नी
	मिठठनलाल की पत्नी

संदर्भ एवं आधार ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

भगवतीचरण वर्मा - आखिरी दाँव
भूले बिसरे चित्र
सामर्थ्य और सीमा

संदर्भ ग्रंथ सूची

पृष्ठ क्रमांक

1. भगवतीचरण वर्मा - भूले बिसरे चित्र 367
चतुर्थ संस्करण 1966
राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.
दिल्ली - 6.

2. भगवतीचरण वर्मा - वही 111